सुख की कुंजी

13

(कविता)

तपती धरती, तपता *अंबर*,
कण-कण बना अंगारा।
झुलस रही हरियाली सारी,
झुलस रहा जग सारा।।

पक्षी दुबक रहे *नीड़ों* में,
पशु सब *हाँफे* जाते।
छाया भी छाया पाने को,
सिकुड़ रही शरमाते।।

छाया सड़कों पर *सन्नाटा*,
तपी जेठ की गरमी।
सूख गई है *दूब* खेत की,
नहीं नाम को नरमी।।

जेठ तपे तो बरखा आए,
रिमझिम बरसे पानी।
तपन मिटे धरती की सारी,
लहरें खेती *धानी* ।।

जो जन जितना कष्ट झेलते,
उतना ही सुख पाते।
तपना ही सुख की *कुंजी* है,
सबको बतला जाते।।

—भगवती प्रसाद

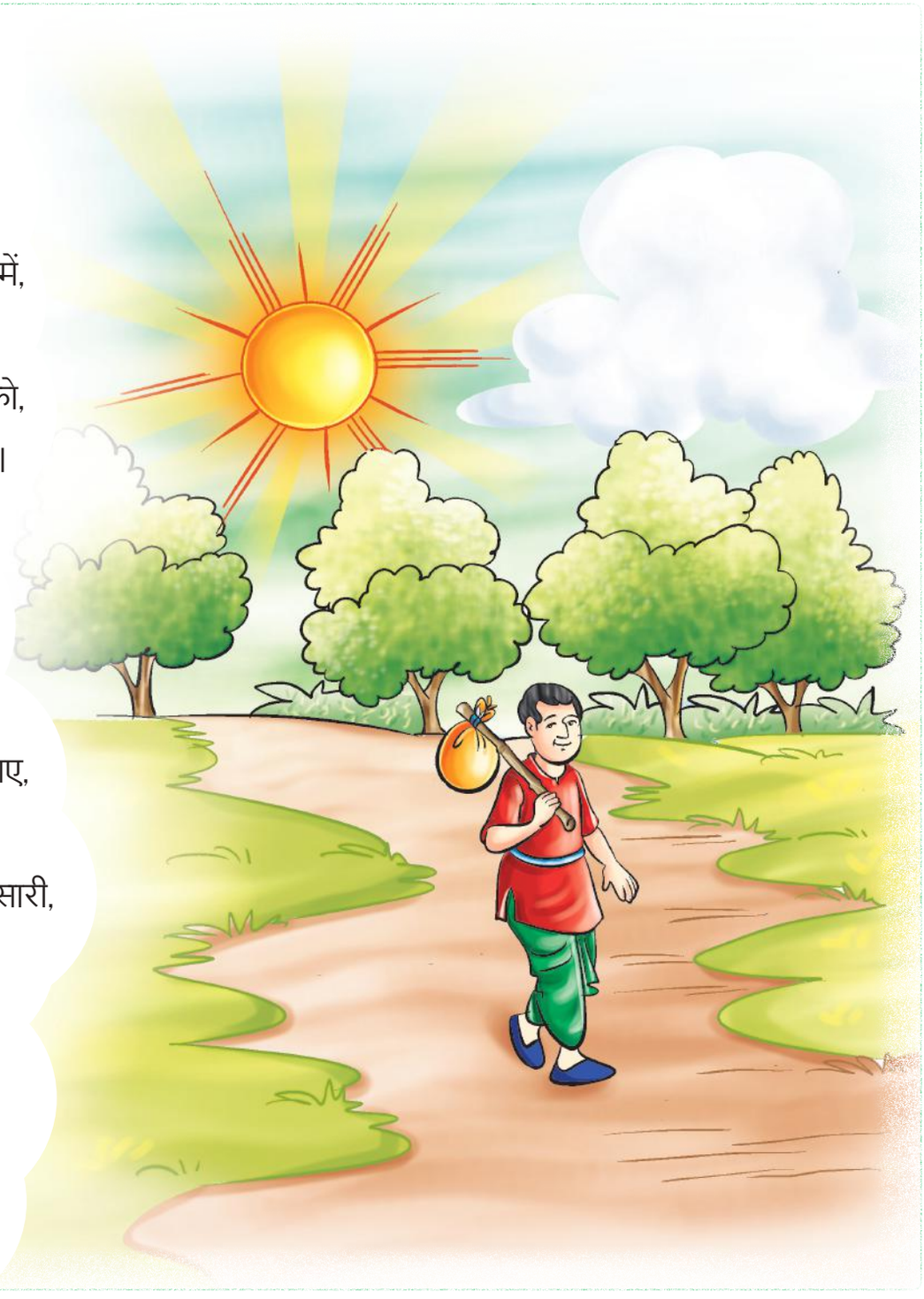

शब्द-अर्थ

अंबर — आकाश, *(sky)*,
नीड़ — घोंसला *(nest)*,
सन्नाटा — खामोशी *(silence)*,
धानी — धान का सा हरा-पीला रंग *(dhani colour)*,
कुंजी — चाबी *(key)*,
झुलस रही — जल रही *(getting scorched)*,
दूब — घास *(grass)*,
तपन — गरमी, जलन *(heat)*,
हाँफना — थकने पर या जल्दी-जल्दी साँस लेना *(gasp)*,
लहरे — हरी-भरी फसलों का झूमना *(waves)*।

कविता का भावार्थ – प्रस्तुत कविता में कवि भगवती प्रसाद ने दिन के सूरज को भीषण गरमी के विषय में बताते हुए, तपन को ही सुख की कुंजी का उपनाम दिया है। कवि कहते हैं कि धरती और आसमान सूरज की गरमी से तपकर उनका कण-कण अंगारा बन रहा है। धरती की सारी हरियाली और सारा विश्व गरमी से झुलस रहा है। पक्षी अपने घोंसलों में छिप रहे हैं, पशु भी सब हाँफ-हाँफकर काम कर रहे हैं। छाया भी छाया पाने की शरमाकर सिकुड़ रही है। गरमी में सड़कों पर चहल-पहल कम होने के कारण सन्नाटा पसर रहा है। खेतो के सारी घास भी सूख गई है उसमें नरमी नहीं बची है। जेठ अर्थात् गरमी की तपन ज्यादा हो तो बारिश आए और बारिश का रिमझिम पानी बरसे। धरती की सारी जलन मिट जाए और लहरों का हल्का पीला रंग भी वापस आ जाए। इसी तरह हम मनुष्य अपने जीवन में जितना कष्ट सहते हैं अर्थात् जितनी हम मेहनत करते हैं उतना ही हम आगे चलकर सुख पाते हैं। हमारी मेहनत ही हमारी खुशियों की चाबी है यही हम सबको बता रहे है।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

अंबर	हरियाली	झुलस	हाँफे	शरमाते
सन्नाटा	रिमझिम	कष्ट	कुंजी	सिकुड़

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) प्रस्तुत कविता में कवि क्या कहना चाहता है?
(ख) कविता 'सुख की कुंजी' के कवि का क्या नाम है?
(ग) किससे सारा जग झुलस रहा है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

पंक्तियों के सही भाव पहचानें–

(क) "कण-कण बना अंगारा।"

☐ अंगारे बरस रहे हैं।
☐ बहुत गरमी पड़ रही है।
☐ आग लगी है।

(ख) "छाया भी छाया पाने को सिकुड़ रही शरमाते।"

- ☐ छाया शरमा रही हैं।
- ☐ छाया को भी छाया प्राप्त नहीं है।
- ☐ छाया समाप्त हो गई है।

(ग) "तपना ही सुख की कुंजी है।"

- ☐ आग में तपने से सुख मिलता है।
- ☐ तपस्या से सुख मिलता है।
- ☐ कष्ट झेलने से सुख मिलता है।

2. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) गरमी के कारण धरती, अंबर तप रहे हैं। ☐

(ख) कवि ने कविता में अपने लक्ष्य के बारे में बताया है। ☐

(ग) कविता में गरमी के कारण खेत सूख गए हैं। ☐

(घ) बारिश के पड़ने से धरती की तपन खत्म नहीं होती है। ☐

(ङ) कवि के अनुसार जो मेहनत नहीं करता उसे सुख प्राप्त नहीं होता है। ☐

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कविता 'सुख की कुंजी' में कवि का क्या उद्देश्य है?

(ख) कवि ने किस शीर्षक को सामने रखते हुए इस कविता का वर्णन किया है?

(ग) कविता में छाया क्यों सिकुड़ रही है?

(घ) कौन ज्यादा सुख पाता है?

(ङ) सुख की कुंजी क्या है?

भाषा-ज्ञान

1. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाएँ–

(क) 'धरती' का पर्याय नहीं है-

- ☐ जमीन
- ☐ पृथ्वी
- ☐ अंबर

(ख) 'हरियाली' शब्द का सही विशेषण है-

- ☐ हरिया
- ☐ हरा
- ☐ हरापन

(ग) किस शब्द में संयुक्त व्यंजन का प्रयोग नहीं है-

- ☐ सन्नाटा
- ☐ कष्ट
- ☐ पक्षी

2. आप इन पंक्तियों का क्या अर्थ समझें? कक्षा में कहिए।

जेठ तपे तो बरखा आए,
रिमझिम बरसे पानी।
तपन मिटे धरती की सारी,
लहरे खेती धानी।।

3. इनके सही पर्याय चुनकर लिखिए–

आकाश, लोग, संसार, विहग, नभ, खग, विश्व, मनुष्य

(क) अंबर ....
(ख) जग ....
(ग) पक्षी ....
(घ) जन ....

क्रियात्मक गतिविधि

- लू का प्रभाव दिखाने वाली यह कविता याद करें–

मई जून में चलती लू, भट्ठी जैसी जलती लू।
बैठ गोद में गरमी माँ की, बड़े प्यार से पलती लू।
खरबूजों, तरबूजों, आमों, शहतूतों को फलती लू।
पका फलों को मीठा करती, फीका स्वाद बदलती लू।
गरमा-गरम थपेड़े लगते, पंखा जब भी झेलती लू।
तन झुलसाती, मन कुम्हलाती, सबको भारी खलती लू।
नहीं पहुँच पाती पहाड़ पर, हाथ बहुत तब मलती लू।
आसमान पर बादल छाते, तो लगती है ढलने लू।

- दिए गए स्थान पर एक भीषण गरम दिन का वर्णन कीजिए–

.....
.....
.....
.....
.....
.....